कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ...हिन्दी...

परीक्षा का दिन ...शनिवार...

दिनांक ...9/03/19...

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंको में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ख

3.
(अ) व्यापक सामाजिक क्षेत्र में बोली जाने वाली वाचिक अभिव्यक्ति के साधन को भाषा कहते हैं। सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली वाचिक अभिव्यक्ति बोली या उपभाषा कहलाती है। भाषा का अपना व्याकरण होता है जबकि बोली या उपभाषा का व्याकरण नहीं होता है।

(ब) भाषा के दो रूप होते हैं -
मौखिक रूप - इसमें व्यक्ति अपने विचार बोलकर प्रकट करता है।
लिखित रूप - इसमें व्यक्ति अपने विचार लिखकर प्रकट करता है।

4.
(अ) वाह! ⇒ विस्मयादिबोधक, अव्यय
हर्ष सूचक

(ब) रोज ⇒ ~~[illegible]~~ विशेषण
व्यायाम कार्य करने की निरन्तरता को व्यक्त करता है।
पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमान काल

5. उपर्युक्त वाक्य में लक्षणा शब्द शक्ति है।
जब शब्द के मुख्यार्थ में बाधा हो तब अन्य अर्थ किसी लक्षण या दीर्घ काल से माने जा रहे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इस प्रकार वे बाज़ार का बाज़ारुपन बढ़ाते है अर्थात बाज़ार मे कपट बढ़ाते है। कपट के बढ़ने से बाजार मे परस्पर सद्भाव घट जाता है।

विशेष - लेखने ने बाज़ार की सार्थकता आवश्यकता के समय काम आना मानी है।
- भाषा सहज, व्यंग्यात्मक व विवेचनात्मक है।
- पर्चेजिंग पावर' का अर्थ है पैसो की क्रय शक्ति है।

12. "प्रियवर - - - - - - कहा ?

उत्तर - प्रस्तुत कथन जार्ज वाशिंगटन ने कहा है। जार्ज वाशिंगटन अमेरिका मे राजाओं की वंश परम्परा के प्रबल विरोधी थे। जब अमेरिका मे प्रजातंत्र आया तो वाशिंगटन वहाँ के राष्ट्रपति बने। लेकिन जब लोगो ने उन्हें तीसरी बार पुन: राष्ट्रपति के पद के लिए चुनाव लड़ने को कहा तो उन्होने लोगो को समझाते हुए कहा कि "प्रियवर ! आप भूल गये है कि हमने इस विधान को किस उद्देश्य की पुर्ति के लिए बनाया है।" उन्होने ऐसा इसलिए कहा कि वे वहाँ के राजा का पदस्थापन्न नही बनना चाहते थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

13. 'उषा' कविता _ _ _ _ _ _ _ कीजिए।

उत्तर- 'उषा' कविता में कवि शमशेर बहादुर सिंह ने प्रातः कालीन सूर्योदय का जीवन्त परिवेश का चित्रण किया है। उषाकाल के समय प्राकृतिक वातावरण अतीव मनोरम लगता है। कवि कहता है प्रातः काल नभ बहुत ही मनोरम लगता है जैसे कि नीला शंख हो। फिर जब पूर्व दिशा से सूर्य की कुछ लाल कीरणे आती है तो ऐसा लगता है जैसे स्लेट रुपी आकाश पर किसी ने लाल खड़ियाँ चाक मल दी हो। इस प्रकार उषाकाल में आकाश ~~कुल~~ कुछ लाल व कुछ काला-सा दिखाई देता है। आकाश की नमी व यह मनोरम दृश्य सभी को अपनी ओर आकर्षित ~~कर~~ करता है।

कवि कहता है - प्रातः नभ था ~~बहु~~
बहुत नीला शंख जैसे

इस प्रकार कवि ने प्रातः कालीन सूर्योदय का जीवन्त परिवेश का चित्रण किया है।

14. इस पंक्ति में कवि कृपाराम खिड़िया अपने सेवक ~~ब~~ राजिया को सम्बोधित करते हुए कहते है कि सच्चा मित्र अपने मित्र के लिए हर काम करने को तैयार रहता है। जिस प्रकार श्रीकृष्ण ने अपने मित्र अर्जुन के लिए रथ हाँकने का कार्य भी सहर्ष स्वीकार कर लिया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	15.	यह मानव वृत्ति है कि संयोका वियोग काल में संयोगकाल की सारी वस्तुएँ कष्ट दायक लगती है। कृष्ण के साथ गोपियो को ब्रज की लहरे अतीव मोहक लगती थी परन्तु वियोगकाल में वे उनके लिए अग्नि की लपटो की तरह लगने लगी। इस प्रकार श्री कृष्ण की अनुपस्थिति में गोपियो को यमुना का स्वछंद प्रवाह, कमलो का खिलना आदि सब संतापदायक लगने लगी।
	16.	मेहनतकश लोगो के श्रम और उनकी मजदूरी के मूल्य को पैसे देकर नहीं बल्कि उनसे अच्छा आचरण करके व स्वयं को भी उसके प्रति समर्पित करके चुकाया जा सकता है। क्योंकि मजदूरी करते समय उसने अपना सबकुछ हमें अर्पित कर दिया होता है।
	17.	लेखक ने कौसानी की तुलना स्विट्ज़रलैण्ड से इसलिए की है क्योंकि कौसानी का प्राकृतिक वातावरण भी स्विट्ज़रलैण्ड की तरह आकर्षक व मनमोहक है। कौसानी में भी स्विट्ज़रलैण्ड की तरह बर्फ है व वहाँ का प्राकृतिक परिवेश भी अति मनोरम है। इसी कारण लेखक ने कौसानी की तुलना स्विट्ज़रलैण्ड से की है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. कवि हरिवंश राय बच्चन - जन्म - 1907 ई.
मृत्यु - 2003

उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म इलाहबाद (वर्तमान प्रयागराज) उत्तरप्रदेश में हुआ।

→ इन्हें हिन्दी साहित्य में हालावाद का प्रवर्तक कवि माना जाता है।

→ ये फारसी कवि उमर खय्याम के जीवन दर्शन से काफी प्रभावित थे। उमर खय्याम की 'रुबाइयों' से प्रेरित होकर इन्होने अमर काव्य कृति मधुशाला की रचना की।

→ इन्होने प्यार, मोहब्बत, इश्क और रुमानियत से भरी कविताओं की रचना की।

→ ये परस्पर लड़ाई के बजाय प्यार को अधिक महत्त्व देते थे।

→ इनकी प्रमुख कृतियाँ/ रचनाएँ -
मधुशाला, मधुबाला, निशा निमन्त्रण

19. नायिका के मन में अनेक व्यथाएँ व भावनाएँ है जिन्हे वह पत्र के माध्यम से व्यक्त नही कर पा रही है। इसी के साथ पत्र लिखते समय उसकी आंखो से आसु पत्र पर गिर जाते है। इस कारण वह नायक को पत्र नहीं लिख पा रही है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

20. यह वाक्य ममता ने कहा था। जब मुगल सेनापति ममता की कुटिया में आया था तब मृत्युशैय्या पर लेटी हुई ममता ने उससे यह कहा था। एक रात हुमायु ममता की कुटिया में विश्राम करने के लिए रुका था और उसने वहाँ घर बनाने के लिए कहा था। इसी कारण अकबर का सेनापति ममता के लिए घर ~~बना~~ बनाने के लिए वहाँ आया था।

खण्ड - घ

21. प्रस्तुत वाक्य सुबेदारनी होरा ने लहनासिंह से कहा था। क्योंकि सुबेदारनी के पति व पुत्र दोनो ही लहनासिंह के साथ जर्मन से युद्ध लड़ने के लिए जा रहे थे। तब सुबेदारनी ने लहनासिंह को उन दोनो की रक्षा करने के लिए उससे विनती करते हुए यह वाक्य कहाँ था।

22. जब गाँधी जी दक्षिण अफ्रिका से भारत लौटे तो उन्होंने कहीं चरखा नहीं देखा था। गाँधी जी ने चरखे की सहायता से स्वराज्य स्थापना व हिन्दुस्तान की कंगालियत मिटाने का सोचा। खादी के जन्म के लिए उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। क्योंकि उनके आश्रम में किसी को भी करघा चलाने नही आता था व उन्हें

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कोई चरखा चलाने व सुत कातना सीखाने वाला भी नही मिल रहा था। तब विधवा बहन गंगा बाई ने उन्हे करघा चलाने सीखाने वाले को ढुढ़ने मे सहायता की। इस प्रकार खादी का जन्म हुआ।

23. ऐसा रत्नावली ने अपने पति गोस्वामी तुलसीदास से कहा। क्योंकि वैराग्य अपनाने के कारण तुलसीदास ने ~~गृहस्थ~~ गृहस्थ जीवन का त्याग कर दिया था। रत्नावली उनसे अतिशय स्नेह करती थी व उसकी यह इच्छा थी की एक बार मृत्यु से पहले अपने पति का मुख देखे।

24. पूज्य गोविन्द गुरु -
पूज्य गोविन्द गुरु का जन्म डुंगपुर जिले के बांसिया गाँव में एक बंजारा परिवार में हुआ था। गोविन्द गुरु ने सम्प सभा की स्थापना की। उन्होने राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन मे भी सहयोग किया। गोविन्द गुरु शस्त्र व शास्त्र दोनो विद्याओं में निपुण थे। उन्होंने ने अग्रेजी सरकार के खिलाफ आंदोलन किए व लोगो के मन मे राष्ट्र के प्रति प्रेम भी जागृत किया। अग्रेजी सरकार ने उन्हें दबाने के लिए मानगढ़ का विभत्स हत्याकाण्ड किया था। इस प्रकार गोविन्द गुरु

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

का जीवन राष्ट्र के प्रति समर्पित था।

महाराजा सूरजमल –

महाराजा सूरजमल का जन्म भरतपुर के राजा राव लक्ष्मणसिंह के यहाँ हुआ। वे बचपन से ही वीर व साहसी थे। इन्होंने मुगलो पर आक्रमण किए तथा वीरता के साथ अनेक युद्ध लड़े। उनका जीवन लोगो के लिए वीरता, साहस, शौर्य व बलिदान के साथ जीवन जीने को प्रेरित करता है। वे धार्मिक व प्रकृति संरक्षक भी थे।

खण्ड - ङ

25. वर्तमान समय में लेखन अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम व सर्वव्यापी माध्यम इंटरनेट बनता जा रहा है क्योंकि लोग अब अपने ब्लॉग, पोर्टल आदि नेट के प्रयोग से इन्टरनेट की साइट आदि पर प्रकाशित कर रहे है। इन्टरनेट को न्यू मीडिया व

26. लेख व ~~फीच~~ फीचर मे अंतर –
लेख गम्भीर प्रमाणिक लेखन की श्रेणी में आता है जबकि फीचर किसी विषय का मनोरंजनपूर्ण व विशद प्रस्तुतिकरण है। लेख सबकी रुचि के अनुकुल नही होता है इसमें नीरसता रहती है जबकि फीचर सबको

परीक्षार्थी उत्तर

रुचि के अनुकूल होता है व इसमें सरसता होती है।

27. पत्रकारिता के कई क्षेत्र है। जैसे - खेल पत्रकारिता, वाणिज्य पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, फिल्मी पत्रकारिता।

खेल पत्रकारिता - वर्तमान में अनेक खेलो के प्रति पाठको की रुचि बढ़ी है। समाचार पत्र में खेल ~~पत्रका~~ समाचार का अलग पृष्ठ होता है। अत: खेलो के समाचार, समीक्षाएँ आदि के बारे में जानकारी पाठको तक पहुचाना खेल पत्रकारिता कहलाती है।

28. रिपोर्ताज - किसी घटना या वर्ण्य विषय का तथ्यपूर्ण रोचक व कलात्मक प्रस्तुतिकरण रिपोर्ताज कहलाता है।

~~इसमें~~ रिपोर्ताज की विशेषताएँ निम्नलिखित है -

(i) इसमें कथातत्व की प्रधानता होती है।

(ii) रिपोर्ताज में बाह्य स्वरूप की अभिव्यक्ति अधिक होती है।

(iii) यह एक साहित्यिक विधा है।

(iv) इसमें सरसता होती है।

(v) किसी वर्ण्य विषय का ऐसा प्रस्तुतिकरण जो इसे पढ़ने वाले के हृदय तंत्री के तार

परीक्षक द्वारा प्राप्तांक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

को झंकृत कर दे, उसे रिपोर्ताज कहते है।

29. साहित्य में डायरी लेखन का विशेष महत्त्व है। डायरी लिखने से व्यक्ति को अपने पूर्व जीवन का अनुभव होता है। उसे पता चलता है कि वह पिछले जीवन की भांति कितना परिपक्व हुआ। यात्रा करते समय लिखी गयी डायरियों का अत्यधिक महत्त्व है। हिन्दी साहित्य में अनेक डायरी लेखक हुए है जिन्होंने साहित्य में डायरी के महत्व को बढ़ाया है। डायरी मुख्यतया चार प्रकार से लिखी जाती है -

i) व्यक्तिगत डायरियाँ
ii) वास्तविक डायरियाँ
iii) काल्पनिक डायरियाँ
iv) साहित्यिक डायरियाँ

इनमें हिन्दी साहित्य में व्यक्तिगत व साहित्यिक डायरियाँ मुख्यतया लिखी गयी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ख

8. अधिसूचना

उद्योग विभाग

राजस्थान सरकार

जयपुर

क्रमांक - 4(6) उवि/2018-17/46 8 मार्च 2019

राजस्थान सरकार अपनी शक्तियों का प्रयोग करते हुए खादी ग्रामोद्योग खोलना चाहती है। अतः एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि कोई भी इस कार्य के लिए कोई प्रतिवेदन करने का इच्छुक हो तो वह अपना प्रतिवेदन इस अधिसूचना के जारी होने के 20 दिनो के अन्दर सचिव उद्योग विभाग, जयपुर के कार्यालय में प्रेषित कर सकता है।

राज्यपाल महोदय की आज्ञा से -

सचिव
उद्योग विभाग
जयपुर

प्रतिलिपि सूचना हेतु प्रेषित -
सचिव, सचिवालय उद्योग विभाग
अधीक्षक मुद्रालय जयपुर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9.

मेरा प्रिय कवि

प्रस्तावना - हिन्दी साहित्य की शोभा बढ़ाने में कवियों का अप्रितम योगदान है। मेरी हिन्दी साहित्य में गहरी रुचि है। मुझे कविताएँ, दोहे, आदि पढ़ना अच्छा लगता है। वैसे तो मैं समस्त कवियों का सम्मान करती हूँ। मुझे कवि भूषण, कवयित्री सुभद्रकुमारी चौहान, रहीम, बिहारी आदि समस्त का काव्य बहुत सुन्दर व मनमोहक लगता है। परन्तु मैं गोस्वामी तुलसीदास के जीवन दर्शन से काफी अधिक प्रभावी हूँ। वही मेरे प्रिय कवि है।

तुलसीदास जी का परिचय - तुलसीदास जी का जन्म 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। तुलसीदास अभुक्तमूल नक्षत्र में पैदा हुए थे। इनके पिता का नाम आत्माराम था। इनकी माता का नाम हुलसी था। इनके गुरु नरहरिदास थे। इन्होंने विधिवत शिक्षा शेष सनातन से प्राप्त की थी।

तुलसीदास जी अपनी पत्नी रत्नावली से अतिशय प्रेम करते थे। परन्तु एक बार रत्नावली द्वारा उत्प्रेरित किए जाने

पर इनके मन में राम प्रेम जाग्रत हो गया। तब से इन्होने गृह त्याग कर दिया व राम भक्ति में लगे रहे। इन्हें रूपक का सम्राट कहा जाता है। तुलसीदास ने गृहस्थ जीवन त्यागकर वैराग्य धारण कर लिया था। लोलार्क कुण्ड में ये गोस्वामी तुलसीदास के रूप में रामभक्ति करने लगे।

तुलसीदास जी की प्रमुख रचनाएँ -

तुलसीदास जी ने अपने काव्य लेखन का कार्य अवधी व ब्रज दोनो भाषाओं में किया। इन्होने अवधी भाषा में रामचरितमानस की रचना की। रामचरितमानस ~~अ~~ इनकी प्रसिद्धि का प्रमुख आधार है। रामचरितमानस मे प्रमुख सात काण्ड है। इसमें पहला काण्ड बाल काण्ड तथा अंतिम काण्ड उत्तर काण्ड है। रामचरितमानस की रचना इन्होने दो वर्ष व आठ माह मे की। यह मेरी प्रिय रचना है। इसके अलावा तुलसीदासजी ने गीतावली, कृष्णगीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका आदि की रचना की। तुलसीदास जी के काव्य मे समन्वय की भावना सर्वोपरी है। वे समाज में समानता को महत्व देते थे। तुलसीदास जी के जीवन से अनेक शिक्षा मिलती है। उनके इस ~~छ~~ पद्य मे उनकी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

समन्वय की भावना प्रदर्शित हुई है।

तुलसी या संसार में भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिलमिल चालिये नदी नाव संयोग॥

उनका यह पद मुझे अत्यधिक पसन्द है।

तुलसीदास जी की विशेषताएँ -

तुलसीदास जी ने लोलार्क कुण्ड में गोस्वामी की उपाधि प्राप्त की। वे रत्नावली से अति स्नेह रखते थे फिर भी उन्होंने वैराग्य धारण किया। तुलसीदास ने समाज में जो आदर्श स्थापित किए थे वे आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है। उन्होंने ने समाज में धर्म का प्रचार किया। तुलसीदास ने अपने वैराग्य का पूरी तरह पालन किया तथा वे लगातार राममक्ति में लीन रहे है।

तुलसीदास के काव्य से सीख -

तुलसीदास जी के काव्य को पढ़कर मेरे मन में ऊर्जा का संचार होने लग जाता है। उनके काव्य से हमे यह सीख मिलती है कि हमे सदैव सभी से समान व्यवहार करना चाहिए। जीवन में निरन्तर

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रयास करते रहना चाहिए। उन्होने काम, क्रोध, मद, लोभ तथा गृहस्थ जीवन को ईश्वर प्राप्ति में बाधक बताया है। तुलसीदास जी ने अपने काव्य में जिस आदर्श समाज व लोक नायक की कल्पना की है वह अप्रितम है। हमे उनके आदर्शों को जीवन में अपनाना चाहिए।

उपसंहार - मेरे प्रिय कवि तुलसीदास के जीवन से हमे अनेक संस्कार मिलते है। उनके आदर्शों पर चलकर व्यक्ति अनेक जीवन की ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है। इस कारण वे तुलसीदासजी को अपने जीवन का आदर्श व अपना प्रिय कवि मानती हूँ।

समाप्त

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-165/2019

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-16/2019